(22)

वाटिका

मद-कण्टक निर्मूल सब, अपकृत-विटप-विपर्ण ।
विषम कामझंझा रूके, तृष्णालता विवर्ण ।। 1 ।।

मोहनिशा अपसरित हो, उदित ज्ञान का भानु।
दग्धकुबीज सुचित्त हो, साधन ज्वलित कृशानु।। 2 ।।

नीलकण्ठ सत्वर करें, पापकीटकुल-नाश।
द्रुत विकेक-केकी करें, भ्रम-भोगी का प्राश।।3 ।।

सुकृत-बीज-पटु-वपन हो, करूणावारि प्रसेक।
वेदवचन-कोकिल मुखर, शमित दुर्वचन भेक।। 4 ।।

जनसेवा उर्वरक शुभ, दम हो सुदृढ़ खनित्र।
हर ऋतु में कुसुमित रहे, यह उद्यान विचित्र।। 5 ।।

वृत्ति-दूब हो हरित नित, विद्यावारि-प्रसिक्त।
ईश-कृपा-धारा करे, उपवन को अभिषिक्त।। 6 ।।

मनोभूमि उर्वर सतत्, फूलें सुमन सुवर्ण ।
उद्यम-तरू धारें सुफल, भावलता नवपर्ण ।। 7 ।।

हर्षित हो कलरव करें, सद्विचार-खगवृन्द।
विकसे जीवन-वाटिका, फैले सुयश-सुगन्ध ।। 8 ।।
पंकिलता से रहित हो, उर-वापी गंभीर।
पूरित श्रद्धा-कमलिनी, से हो उज्जवल नीर।। 9 ।।

महासूर्य के बिम्ब को, धारे हृत्सर पूर्ण ।
माली से मिलने स्वयं, स्वामी आए तूर्ण ।। 10 ।।

- शिव कुमार मिश्र-